Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper Western Logic (BA Part II H.)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 26
August 27, 2020

(Class BA Part II H)
व्याघात का नियम, मध्यदशा परिहार का नियम और विचार के नियमों का परस्पर संबंध

1. व्याघात का नियम :-

व्याघात के नियम को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि ***'अ' 'ब' है और 'अ' 'ब'*** नहीं है, एक साथ सत्य नहीं हो सकता। जैसा गीता में कहा गया है- जिस वस्तु का अभाव है, उसका भाव नहीं हो सकता और जिसका भाव है, उसका अभाव नहीं हो सकता। दूसरे शब्द में **कोई भी वस्तु किसी एक ही देश काल में भाव रूप और अभाव रूप में एक ही साथ नहीं हो सकता।** यदि आप कहते हैं कि 'राम घर में नहीं है' तो इससे मैं यही समझूंगा कि 'राम घर से बाहर है'। यह नहीं कहा जा सकता कि 'राम घर में है और नहीं भी है' जब तक की है और नहीं है को भिन्न अर्थों में न लिया गया हो। यदि ***'है'*** का अर्थ ***'शारीरिक उपस्थिति से ही है'*** तो या तो उसकी शारीरिक उपस्थिति होगी या नहीं होगी। 'होगी और नहीं भी हो' यह संभव नहीं है; क्योंकि इस स्थिति में व्याघात होता है।

1.1 हैमिल्टन का अव्याघात का नियम

हैमिल्टन ने व्याघात के नियम को अव्याघात का नियम कहा है। इनके अनुसार शुद्ध विचार का यह नियम है कि उसे अव्याघात नहीं होना चाहिए। अर्थात् यदि कोई वस्तु श्वेत है तो वह अश्वेत नहीं हो सकती और यदि किसी वस्तु का अस्तित्व है तो उसका अभाव नहीं हो सकता। अन्य शब्दों में ***'या तो अ, ब है या ब नहीं है'।*** वह ब हो भी, और नहीं भी हो; यह एक साथ, एक समय में और एक स्थान पर संभव नहीं है। किसी भी वस्तु में एक ही देश काल में परस्पर विरोधी गुण नहीं हो सकते।

यह ठीक है कि ढाल श्वेत और अश्वेत दोनों है साथ ही उसका एक ही पहलू भी कभी अश्वेत और श्वेत भी एक साथ हो सकता। किंतु एक ही समय में ढाल का कोई एक ही पहलू श्वेत भी हो सकता है और अश्वेत भी यह संभव नहीं है। विचार इस नियम को व्याघात का नियम ना कह कर अव्याघात का नियम कहना ही अधिक उपयुक्त होगा; क्योंकि शुद्ध विचार के लिए अव्याघात, एक शर्त है। व्याघात होने पर विचार अशुद्ध हो जाता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

1.2 अव्याघात नियम का महत्व

इस नियम के संदर्भ में यह बात ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रकृति में भले ही वस्तुओं में परस्पर विरोधी गुण दिखलाई पड़ते हैं, किंतु विचार के जगत् में अव्याघाट के नियम को माने बिना शुद्ध विचार नहीं किया जा सकता; क्योंकि यदि किसी कथन का उल्टा भी सत्य हो तो, या तो वह कथन ही सही होगा या उसका उल्टा, दोनों एक साथ सही नहीं कहा जा सकता है।

2. मध्यदशा परिहार का नियम

इस नियम का अर्थ है कि 'किसी भी वस्तु के दो परस्पर विरुद्ध दशाओं में से किसी एक पर ही उस वस्तु का आरोप किया जा सकता है; मध्य दशा संभव नहीं है। उदाहरण के लिए कागज का टुकड़ा या तो श्वेत हो सकता है या अश्वेत। इन दोनों स्थितियों में मध्य की कोई स्थिती संभव नहीं है। इसलिए जेबोस ने यह ठीक ही कहा है कि 'मध्य दशा परिहार नियम से यह सिद्ध होता है कि परस्पर विरोधी स्थितियों में से मध्य मार्ग या तीसरा विकल्प संभव नहीं है यहां ध्यान रखने की बात यह है (The very name of the law expresses the fact that there is no third or middle course.) ध्यान रखनें योग्य यह बात है कि मध्य दशा परिहार परस्पर विरोधी गुणों में ही होता है; जैसे श्वेत अथवा अश्वेत। जो गुण परस्पर विरोधी नहीं है उनमें यह नियम लागू नहीं होगा। कोई भी वस्तु एक ही साथ कठोर और अकठोर, उपस्थित और अनपस्थित या अनुपस्थित श्वेत अथवा अश्वेत नहीं हो सकती और ना इनमें से उनकी कोई मध्य/बीच की स्थिति हो सकती है।

2.1 मध्य दशा परिहार का नियम का महत्व

मध्य दशा परिहार का नियम परस्पर विरोधी गुणों में मध्य अवस्था का परिहार करता है। उदाहरण के लिए श्वेत और अश्वेत, कठोर और कठोर, भाव और अभाव के बीच मध्य की कोई स्थिति नहीं हो सकती। यह पद व्याघातक पद हैं और एक दूसरे का निषेध करते हैं। मध्य दशा परिहार का नियम वही लागू होता है *जहां किसी निर्णय में विधेय पद व्याघातक होते हैं, जिनमें मध्य की दशा संभव नहीं हो सकती। यह नियम ये दिखलाता है कि व्याघातक गुणों में से किसी एक को मानना आवश्यक है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 26
August 27, 2020

3. विचार के नियमों का परस्पर संबंध

विचार के सभी तीनों नियमों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। तादात्म्य का नियम जो बात कहता है उसी बात को दूसरे ढंग से व्याघात का नियम कहता है; और व्याघात का नियम व्याघातक पदों में से दोनों को एक साथ, एक समय में सत्य नहीं मानता। जबकि मध्य तथा परिहार का नियम यह मानता है कि दोनों असत्य नहीं हो सकते। उनमें से कोई एक अवश्य ही सही होगा। इस प्रकार विचार के यह तीनों नियम परस्पर घनिष्ठ रूप से अन्तर्सम्बन्धित है। फिर भी मौलिक रूप से ये परस्पर स्वतंत्र हैं और समान रूप से मौलिक भी हैं। तीनों नियम विचार की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं पर जोर देते हैं।

तादात्म्य का नियम विचार की भावात्मक दशा पर जोर देता है, जबकि अव्याघात का नियम विचार की अभावात्मक या निषेधात्मक दशा पर जोर देता है। इसी तरह जहाँ अव्याघात का नियम किसी पदार्थ में व्याघातक गुणों के आरोप को असत्य मानता है, वहीं मध्य दशा परिहार का नियम यह दिखलाता है कि दो व्याघातक पदों में दोनों एक साथ असत्य नहीं हो सकते। इस प्रकार यह तीनों नियम अपनी-अपनी विशेषताएं रखते हैं। सभी नियम भेद में अभेद पर जोर देते हैं। भेद में अभेद समस्त विचार का आधार है। अभेद एकता दिखलाता है तो भेद भिन्नता दिखलाता है। एकता और अनेकता दोनों ही परस्पर पूरक है।